बाबाजी की अमर कथा

द्वितीय अध्याय

''जय बाबे दी''

एक प्राचीन कथा के अनुसार भगवान शिव वन विहार के लिये गये हुये थे तो नारद मुनी माता पार्वती के पास पहुंच गये और माँ को प्रणाम करते हुये कहने लगे अगर आपकी आज्ञा हो तो आप से एक विनती करना चाहता हूं । माँ पार्वती ने कहा कहो नारद जी क्या कहना चाहते हो, नारद जी बोले हे माता पार्वती तीनों लोकों के पालन हार भगवान शिव तो अमर हैं और आप का कई बार जन्म हो चुका है, उन्होंने आपको कभी अमर कथा नहीं सुनाई है, इसका क्या कारण है । प्रभु शंकर अमर कथा जानते हैं और जो अमर कथा सुन लेता है जन्म–मरण के चक्कर से मुक्त हो जाता है और चौरासी जुनियों के चक्कर में नहीं आता अगर आप चाहे तो प्रभु से अमर कथा सुन सकती हैं। इतना कहते हुये नारद मुनी आज्ञा लेकर चले गये। माँ पार्वती व्याकुल होकर भगवान शंकर का इन्तजार करने लगी जब प्रभु वन विहार से वापस लौटकर आये तो माँ पार्वती ने प्रभु शंकर से कहॉ हे स्वामी आप सृष्टि के दाता हो जगत के भाग्य विधाता हो और आपकी अर्द्धांगिनी अति कष्ट से व्याकुल हो रही है। तब प्रभु शंकर ने माँ पार्वती से उनके कष्ट का कारण पूछा तब माँ पार्वती ने कहा प्रभु आप तो जन्म–मरण से मुक्त हो और मुझे संसार में कई बार जन्म लेना पडता है। इस बन्धन को दूर करने के लिये आप मुझे अमर कथा सुनाने की कृपा करें, नहीं तो मै अभी आपके चरणों में प्राण त्याग दूंगी । प्रभु ने पार्वती की हठ देखकर कहां इस संसार सागर को पार करने का रास्ता अति कठिन है, इसमें बहुत से लोग सद कर्मो को भुलकर पॉच विषयों का शिकार बन जाते है, कुकर्मों में फंस कर अपने कर्मो का फल भोगते है और बार–बार जन्म मरण के चौरासी जुनियों के चक्कर मे फसे रहते है। उनपर भगवान कभी प्रसन्न नहीं होते। जबतक की जीव को अपनी आत्मा से भगवान भक्ति तथा सत्य धर्म के प्रचार का ज्ञान न हो तो वह सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। मै शक्ति भक्ति, सत्य धर्म के पूर्ण ब्रहम ज्ञान के द्वारा अमर हूँ। जन्म–मरण से भी मुक्त हूँ अगर तुम्हारे मन भी यही आशा है तो व्यास गुफा में बैठकर मैं तुम्हें अमर–कथा सुनाउंगा। उसी समय शिव पार्वती दोनों ही व्यास गुफा में पहुँच गये। जब प्रभु शंकर ने गुफा में आसन लगाया तो उन्होंने अपनी शक्ति द्वारा काल अग्नि रूद्र नाम का एक गण प्रकट किया और उसे आज्ञा दी की गुफा के आस–पास एक ऐसी अग्नि प्रकट करों जिसमें जलकर सब जीव धारी जलकर मृत हो जायें। भगवान ताडकेश्वर की आज्ञा पाकर रूद्र ने ऐसा ही किया जिस स्थान पर भगवान शंकर जी का आसन था उसके पास एक शुक (तोता) पक्षी का घोंसला था उस घोंसले में एक अण्डा पडा हुआ था, उस अण्डे पर किसी की भी नजर न पडी और न ही रूद्र अग्नि उसे जला पायी क्योंकि वह जीवधारी अभी उत्पन्न हीं नहीं हुआ था। परन्तु इसके अलावा सब जीवधारी मृत्यु को प्राप्त हो गये और इसके पश्चात शंकर जी नेत्र बन्द करके एकाग्रचित हो पार्वती जी को अमर–कथा सुनाने लगे अमर–कथा की शक्ति द्वारा उस अण्डे से एक जीव प्रकट हुआ। अमर कथा सुनते–सुनते माँ पार्वती को नींद आ गयी। अब माँ पार्वती के स्थान पर वह शुक (तोता) पक्षी अमर–कथा का हुंकारा देने लगा। अमर–कथा जब सम्पूर्ण हुई तो प्रभु शंकर ने ऑखें खोलीं और पार्वती जी से पूछा क्या आपने अब अमर कथा सुनली माँ पार्वती जी ने क्षमा मांगते हुये कहॉ, मैनें अमर–कथा नहीं सुनी। प्रभु ने पूछा तो फिर हुंकारा कौन दे रहा था, माँ पार्वती जी ने कहॉ मुझे मालूम नहीं। तब शंकर जी ने इधर–उधर देखा तो उन्हे शुक (तोता) पक्षी ही नजर आया, और प्रभु को देखते ही उड गया। शंकर जी उस पक्षी को मारने पीछे–पीछे दौडे। वह शुक पक्षी उडता–उडता तीनों लोकों में गया, परन्तु उसे कहीं

भी जगह नहीं मिली श्री वेदव्यास जी की धर्मपत्नी अपनी कुटियॉ के आंगन में सिर के बालों को सुखाते हुये जमहायी ले रही थी तभी वह शुक पक्षी उनके मुख के द्वारा अन्दर प्रवेश कर गया। तब शंकर जी ने ऋषि की पत्नी से कहां देवी लाओ हमारा पक्षी वापस दीजीये, ऋषि पत्नी ने कहॉ महाराज देखलो हमारे पास कोई पक्षी नहीं है। प्रभु शंकर ने कहां वह पक्षी अभी भी तुम्हारे पास है, सिर्फ अपना स्वरूप बदलने के लिये तुम्हारे गर्भ में आलोप हो गया है। फिर प्रभु शंकर ने व्यास ऋषि से कहां आपकी स्त्री के मुख द्वारा हमरा पक्षी इनके पेट मे चला गया है। आप अपनी पत्नी से पूछ लो उसके पेट में हमारा पक्षी गया है कि नहीं तब व्यास ऋषि ने अपनी पत्नी से पूछा तुम्हारे पेट में कोई पक्षी गया है। तब व्यास ऋषि की पत्नी ने कहॉ मैने किसी पक्षी को नहीं देखा, लेकिन प्रभु ऐसा अनुभव होता है कि जैसे कोई जीव मेरे पेट में है। व्यास ऋषि ने प्रभु से प्रार्थना की कि हे महाराज आपका वचन तो सत्य परन्तु स्त्री के गर्भ से पक्षी कैसे निकल सकता है। बस इसका को एक ही उपाय है कि स्त्री को मारकर उसके पेट से पक्षी को निकाल लिया जाये। तब प्रभु शंकर ने कहॉ स्त्री को मारने की क्या आवश्यकता है। इस नारी नादान पर तो हमें बहुत तरस आ रहा है । हमे तो उस शैतान पक्षी पर क्रोध आ रहा है जो अपना स्वरूप बदलने के लिये इस बेचारी स्त्री के गर्भ में आलोप हो गया है । जब वह बाहर आयेगा तो हम उसे मार देगे। व्यास जी ने कहॉ महाराज इसका क्या उपाय है, जो आपकी इच्छा है कर ले। यह शब्द सुनकर शुक पक्षी शंकर जी के भय से माता के गर्भ से बाहर नहीं आया। त्रिलोक स्वामी भी वहीं बैठकर शुक पक्षी के बाहर आने का इन्तजार करने लगे। संसार के सभी कार्य रूक गये। तीनों लोकों में हा–हा–कार मच गया। देवी देवताओं ने विचार किया कि भगवान शंकर को कैसे वापस लायें।

देवतओं से आज्ञा पाकर नारद जी व्यास ऋषि के द्वार पर शंकर जी के पास पहुँचे, और जाकर प्रभु शंकर जी से कहने लगे हे डमरूधारी, हे त्रिशूलधारी, हे तीनों लोकों के पालन हार, हे महाकालेश्वर, हे नीलकण्ठ, हे भोलेनाथ आपका यहॉ कैसे आना हुआ शंकर जी बोले नारद जी यह समस्या आपकी ही पैदा की हुई है और आप ही मुझसे पुछ रहे है। शुक पक्षी व्यास ऋषि की पत्नी के गर्भ में आलोप हो गया है, जब वह बाहर आयेगा तब मै उसे मारकर ही वापस जाउगां। नारद जी ने उत्तर दिया की हे प्रभु आपका वचन है कि जो अमर–कथा सुन लेता है वह अमर हो जाता है, वह जन्म–मरण के चक्कर से मुक्त हो जाता है, यह शुक पक्षी भी आपसे अमर–कथा सुनकर अमर हो चुका है, सो अब यह आपके भय से माता के गर्भ से बाहर नही आ रहा है, और बेचारी स्त्री को भी कष्ट दे रहा है, इसलिये हे अर्द्धनारेश्वर इस पक्षी को वरदान देने की कृपा करें। दया रूपी होकर शिवजी शुक पक्षी से कहने लगे, बेटा तुम माता के गर्भ से बाहर आ जाओं। मै अब तुमसे कुछ नहीं कहुगा। शुक पक्षी ने उत्तर दिया जबतक आप मुझे वरदान नहीं देगे मै माता के गर्भ से बाहर नही आउंगा। प्रभु शंकर ने कहॉ मै तुम्हे वचन देता हूं, लेकिन तुम क्या चाहते हो। शुक पक्षी ने कहां मेरे पैदा होने के समय संसार में जितने भी बच्चे पैदा हों सभी अमर हो जायें यही वरदान देने की कृपा करें। तभी मै माता के गर्भ से बाहर आउंगा। शंकर जी ने यह वरदान देना स्वीकार कर लिया, तब शुक पक्षी मनुष्य के रूप में जन्म लेकर माता के गर्भ से बाहर आया। (संस्कृत में तोते को शुक पक्षी कहते है) इस लिये शुक पक्षी शुकदेव मुनी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

''जय कारा भोले भण्डारी का'' ''बोल सांचे दरबार की जय''

''जय कारा पौणाहारी का बोल सांचे दरबार की जय''

''ओम नमः शिवाय'' ''ओम नमः शिवाय''''ओम नमः शिवाय'''ओम नमः शिवाय''''ओम नमः शिवाय''''ओम नमः शिवाय''

शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’ ’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’ ’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’ ’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः
शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’’’ओम नमः शिवाय’’

’’जय बाबे दी’’